फरवरी २०१६

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

भगवान कहाँ रहते हैं?

संपादकीय

बालमित्रों,

बचपन से ही रोज़ हम भगवान को वंदन करते हैं, प्रार्थना करते हैं, उनकी भक्ति करते हैं। लेकिन क्या हम वास्तव में उनके बारे में जानते हैं? वे कहाँ रहते होंगे, क्या करते होंगे... इसका सही जवाब हम सभी में से शायद ही किसी को पता होगा।

परम पूज्य दादाश्री को इस बात का पता चल गया था। तो आइए, इस अंक में हम उनसे ही भगवान का सही पता प्राप्त करें।

- डिम्पल मेहता

संपादक :
डिम्पल मेहता
वर्ष : ३ अंक : ११
अखंड क्रमांक : ३५
फरवरी २०१६
....
संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

अक्रम एक्सप्रेस

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...

दादाश्री : भगवान कहाँ हैं? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : पूरे ब्रह्मांड में हैं।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। ये लाइट है न, पूरे रूम में उसका उजाला है, लेकिन लाइट तो वहीं है। इसी तरह भगवान विश्व में उजाला करते हैं, लेकिन भगवान तो अपनी जगह पर ही हैं!

प्रश्नकर्ता : तो क्या भगवान नहीं हैं?

दादाश्री : यदि भगवान नहीं होते तो इस जगत् में जो भावनाएँ, सुख और दुःख आदि होते हैं, इनका किसी को अनुभव ही नहीं होता। इसलिए भगवान तो अवश्य ही हैं।

प्रश्नकर्ता : भगवान कहाँ रहते हैं?

दादाश्री : तुम्हें कहाँ लगते हैं?

प्रश्नकर्ता : ऊपर।

दादाश्री : ऊपर कहाँ रहते हैं? तो फिर उनकी गली का नंबर क्या है? गली का पता है क्या तुम्हारे पास? तुम्हारे पास ऐसा एड्रेस है कि जिससे खत पहुँच जाए? ऊपर तो कोई बाप भी नहीं है। मैं सभी जगह देखकर आया हूँ। ऊपर खाली आकाश ही है।

प्रश्नकर्ता : क्या आप भगवान का सही पता बताएँगे?

दादाश्री : ऐसे हर एक जीव के अंदर भगवान हैं जो आँखों से दिखते हैं और नहीं दिखते। मनुष्यों के द्वारा बनाई हुई चीज़ों में नहीं हैं। टेपरिकॉर्ड, घड़ी आदि ये सभी क्रिएशन कहलाते हैं। जिसे कुदरत ने बनाया है, उसमें भगवान हैं। जैसे पानी, वायु, तेज आदि सभी में।

प्रत्येक जीवमात्र और इस जगत् के लोग भगवान स्वरूप ही हैं। पेड़ों में भी जीव है। वैसे तो लोग मुँह से बोलते हैं कि सभी में भगवान हैं, लेकिन वास्तव में उनकी श्रद्धा में नहीं हैं, इसलिए पेड़ों को यों ही काटते, तोड़ते रहते हैं और उनका बहुत ज्यादा नुकसान करते हैं। जीवमात्र का किसी भी तरह का नुकसान करने से पाप बंधता है और किसी जीव को किसी भी तरह का सुख देने से पुण्य बंधता है। आप बगीचे में पानी छिड़कते हो तो जीव को सुख होता है या दुःख? सुख देते हो तो पुण्य बंधता है। बस, इतना ही समझना है।

आपके भीतर भी भगवान विराजमान हैं, उन भगवान को पहचान लिया तो बस काम हो गया। लेकिन जब दिव्यचक्षु प्राप्त होंगे, तभी भगवान दिखेंगे न! इन चमड़े की आँखों से भगवान नहीं दिखेंगे।

यह तो नई ही बात !

जो तुम्हारे और मेरे बीच में आँख से नहीं दिखे, दूरबीन से भी नहीं दिखें, ऐसे सूक्ष्म जीवों से यह जगत् पूरा खचाखच भरा हुआ है। उन सभी के अंदर भगवान विराजमान हैं।

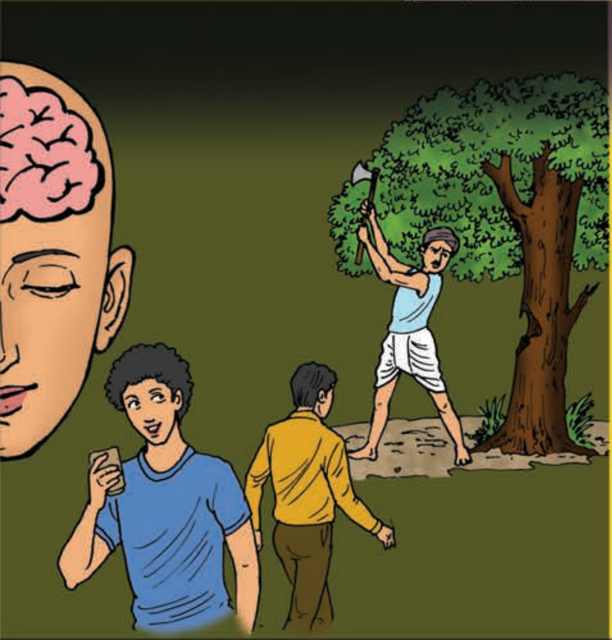

जहाँ सुख और दुःख का अनुभव होता है वहीं भगवान होते हैं और कहीं भगवान नहीं होते। जहाँ सुख-दुःख की भावनाएँ हैं वहीं भगवान विराजमान हैं।

आत्मा सभी जगह एक जैसा ही है। सिर्फ पैकिंग में अंतर है। अलग-अलग शरीर हैं और भीतर भगवान विराजमान हैं!

मैसेज

रीया, यह कैसा हेयर स्टाइल करवाया है? ध्वनी दीदी का हेयर स्टाइल ऐसा है?
हाँ। क्यों मुझे सूट नहीं कर रहा?
नहीं, बिल्कुल भी नहीं। ध्वनी दीदी की तरह कपड़े, ध्वनी दीदी की तरह हेयर स्टाइल... हद करती है तू तो!
ठीक है, मुझे तुम्हारी बक-बक नहीं सुननी। मुझे स्कूल जाने में देर हो रही है। आज टीचर हमें ड्रामे की स्टोरी सुनानेवाली हैं और रोल्स भी देनेवाली हैं।
बैग उठाकर रीया बस-स्टॉप की तरफ भागी। बस-स्टॉप पर एक गरीब स्त्री अपने बच्चे को लेकर ज़मीन पर बैठी थी।
बहन, कितने बज गए? बस क्यों नहीं आई अभी तक?
गरीब स्त्री का पोशाक और हावभाव देखकर, रीया चिढ़ गई। जैसे उसने कुछ सुना ही न हो ऐसे वह घूम गई।

रीया को स्कूल पहुँचने में देर हो गई थी। जल्दी-जल्दी में वह सामने से आती हुई एक लड़की से टकरा गई। लड़की का पहनावा देखकर रीया चिढ़ गई।
लड़की से माफी माँगने के बजाय वह मुँह फेरकर चली गई।
आज कैसे-कैसे लोग टकरा रहे हैं! ऐसे लोगों को स्कूल में आने की पर्मिशन कौन दे देता है। इडियट!
अपनी ही धुन में बड़बड़ाती हुई रीया को पता ही नहीं था कि कोने में लता टीचर खड़ी थीं। लता टीचर ने यह पूरा सीन देखा।
उसके बाद क्लास रूम में...
फ्रेन्ड्स, अपने ड्रामे का शीर्षक है : "भगवान कहाँ रहते हैं?" ड्रामे की स्टोरी और रोल्स डिस्कस करने से पहले मुझे आपसे एक सवाल पूछना है।
यदि मैं आपसे कहूँ कि ड्रामे में जिसका बेस्ट अभिनय होगा उसे यह हज़ार रुपए का नोट मिलेगा, तो तुम में से यह नोट लेने के लिए कौन तैयार है?
सभी की उँगलियाँ ऊपर उठ गईं।

लता टीचर ने उसी नोट को मसलकर फिर प्रश्न किया।
अब, यह नोट लेने के लिए कौन तैयार है?
फिर से उतनी ही उँगलियाँ ऊपर उठीं।
फ्रेन्ड्स, हज़ार रुपए का नोट चाहे जितना गंदा या मसला हुआ हो, लेकिन उसकी कीमत तो उतनी ही रहेगी। राइट?
हाँ!!
उसी तरह, किसी भी जीव का बाहरी दिखाव चाहे कैसा भी हो फिर भी उसके भीतर भगवान बैठे हुए हैं। जिनकी कीमत अमूल्य ही है।
भगवान और कहीं भी नहीं है, जीवमात्र के भीतर ही हैं। और यही हमारे ड्रामे का मैसेज है।
ड्रामे का मैसेज समझाकर टीचर ने ड्रामे की स्टोरी सुनाई और सभी को उनके रोल्स समझाएँ।
क्लास से बाहर निकलते हुए, रीया की नज़र उस गंदी पोशाकवाली लड़की पर पड़ी।
ध्वनी, तेरा कॉस्च्युम परफेक्ट लग रहा है! ऑल द बेस्ट फॉर यॉर ड्रामा!
थैंक यू टीचर!

ओह ध्वनी दीदी ये आप हो? मैंने तो आपको पहचाना ही नहीं। आइ एम सो सॉरी! शाम को मेरा धक्का आपको लग गया था।
इट्स ओ.के. रीया, नो प्रॉब्लेम!
ऐसा कहकर, ध्वनी दीदी चले गए। रीया एकदम झेंप गई। लता टीचर ने ध्वनी और रीया की बातें सुनी।
रीया, जब तुम्हें ध्वनी दीदी की सही पहचान हुई तब तुम्हारी उनकी तरफ दृष्टि बदल गई और तुम्हें अपनी गलती समझ में आई। ठीक है न?
हाँ टीचर।
जैसे भिखारी के भेष में वास्तव में ध्वनी दीदी थे, वैसे ही हर एक जीव भगवान स्वरूप ही है। अपना धक्का किसी को लग जाए या अपने से किसी को दुःख हो जाए तो उसके भीतर बैठे हुए भगवान से माफी माँग लेनी चाहिए। समझ में आया तुम्हें?
हाँ टीचर।
आज तो ड्रामे के मैसेज का रिविज़न हो गया!
उस दिन से रीया ने ड्रामे का मैसेज ही नहीं, बल्कि लाइफ का सब से महत्त्वपूर्ण मैसेज सीख लिया।

भगवान का एड्रेस

पार्थ ने दादा जी के रूम में झाँककर देखा और वह धीरे से अंदर गया। रूम में उसने चारों तरफ नज़र घुमाई। टेबल पर पड़ा हुआ फोटो फ्रेम उठाया, थोड़ी देर तक वह दादा जी और अपने फोटो को गौर से देखता रहा और फिर कोने में पड़ी हुई दादा जी की रॉकिंग चेयर पर जाकर बैठ गया। खिड़की से बाहर देखा, तो मूसलधार बरसात हो रही थी। आँखें बंद करके वह दादा जी के साथ बिताए हुए सुंदर पलों में खो गया। पार्थ की आँखों से टप-टप आँसू बहने लगे।

वह मन ही मन दादा जी से बातें करने लगा, दादा जी आप कहाँ चले गए? मुझे अकेला छोड़कर कहाँ चले गए आप? आप ही तो "मेरे बेस्ट फ्रेन्ड थे।"

तभी अचानक मम्मी की आवाज़ आई, "पार्थ, कहाँ हो बेटा?"

पार्थ को रॉकिंग चेयर पर बैठा हुआ देखकर, मम्मी परेशान हो गईं। उन्होंने पार्थ के पास जाकर, धीरे से उसके सिर पर हाथ फेरा। पार्थ मम्मी से लिपट गया।

"मम्मी, आप तो कहती हो कि दादा जी भगवान के पास गए। लेकिन मुझे यह जानना है कि भगवान कहाँ रहते हैं? भगवान के पास दादा जी खुश तो होंगे न? मुझे भगवान से दादा जी के बारे में पूछना है।"

"बेटा, आज हमने मंदिर में पूजा रखी है। मंदिर के पुजारी से तुम अपने सभी प्रश्नों का जवाब प्राप्त कर लेना। चलो अब जल्दी से तैयार हो जाओ।"

पूजा पूरी होने के बाद पार्थ पुजारी से प्रसाद लेने गया। दायाँ हाथ आगे करके प्रसाद लिया और फिर पालथी लगाकर पुजारी के पास बैठ गया।

"पुजारी महाराज, एक प्रश्न पूछूँ?"

"हाँ, लेकिन एक प्रश्न तो तुमने पूछ ही लिया। अब दूसरा पूछो," महाराज ने पार्थ के साथ थोड़ा मज़ाक किया।

"महाराज, आपने भगवान को देखा है? भगवान कहाँ रहते हैं? मैं भगवान को ढूँढ रहा हूँ।"

छोटे से बच्चे का इतना गंभीर प्रश्न सुनकर महाराज को आश्चर्य हुआ!

"बेटा, वैसे तो कहते हैं कि भगवान मंदिर में रहते हैं। लेकिन सच कहूँ तो आज तक मुझे भगवान के सच्चे दर्शन नहीं हुए।"

छोटे से बच्चे को निराश करने से महाराज को दुःख तो हुआ, लेकिन बच्चे से सही बात कहना भी ज़रूरी था।

"महाराज, कई लोग कहते हैं कि भगवान आकाश में रहते हैं, क्या यह बात सही है?"

"बेटा, ऐसी मान्यता तो है, लेकिन मुझे आज तक ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला कि जिसने भगवान के दर्शन आकाश में किए हों।"

पार्थ को आज भी अपने प्रश्न का उत्तर नहीं मिला। उसके मन में उथल-पुथल होती ही रही, "तो फिर भगवान कहाँ रहते होंगे? भगवान का कोई एड्रेस तो होगा न?"

घर आकर पार्थ को चैन नहीं पड़ रहा था। अलमारी से पुराने फोटो की ऐल्बम निकालकर वह फोटो देखने लगा, तभी मम्मी की आवाज़ आई, "पार्थ, तुम फ्री हो तो सुधा आन्टी के घर यह प्रसाद दे आओ न।"

प्रसाद का पैकेट लेकर वह सुधा आन्टी के घर गया। लिविंग रूम में रोहित भाई को देखकर पार्थ के चेहरे पर मुस्कराहट आ गई।

"अरे, गुगल, आप कब आए?" सुधा आन्टी को प्रसाद का पैकेट देकर पार्थ रोहित के पास जाकर बैठ गया।

पार्थ ने सुधा आन्टी के बेटे, रोहित का नाम, "गुगल" रखा था। क्योंकि गणित हो या भूगोल, इतिहास हो या विज्ञान, रोहित से पार्थ को सभी सवालों के जवाब मिलते थे। रोहित जब से हॉस्टल गया था, तब से पार्थ को उनकी बहुत कमी महसूस हो रही थी।

"दोस्त, बस अभी घंटे पहले ही आया। तू बता, तू कैसा है?" रोहित ने पार्थ के कंधे पर हाथ रखकर पूछा।

रोहित के सवाल से पार्थ थोड़ा गुमसुम हो गया।

पार्थ को गुमसुम देखकर रोहित को ख्याल आ गया, "आइ एम वेरी सॉरी। मैंने दादा जी के बारे में सुना।" रूम में थोड़ी देर के लिए चुप्पी छा गई।

अचानक पार्थ ने रोहित से पूछा, "भगवान कहाँ रहते हैं?"

पार्थ का यह सवाल सुनकर रोहित अवाक् रह गया।

"पार्थ, चल हम बाहर झूले पर बैठकर शांति से बातें करते हैं।" रोहित पार्थ को बालकनी में ले गया।

पार्थ अपने प्रश्न के जवाब का इंतज़ार कर रहा था। पैर के एक हल्के धक्के से, रोहित ने झूला थोड़ा तेज़ किया। फिर पार्थ को देखकर बोला, "गॉड इज़ इन एवरी क्रीचर, व्हेदर विज़िबल ऑर इनविज़िबल। नॉट इन क्रिएशन।"

"यानी?!!"

"यह झूला क्रिएशन कहलाता है। जितनी भी मैन मेड चीज़ें हैं, मनुष्यों द्वारा

बनाई हुई चीज़ों में भगवान नहीं होते। कुदरती बनी हुई चीज़ों में, भगवान होते हैं। यानी मुझ में, तुझ में, इन पेड़-पौधों, पशु-पक्षी, जीवमात्र में भगवान हैं।"

"सचमुच? लेकिन ऐसा कैसे पता चले कि क्रिएशन में भगवान नहीं हैं?"

"इस झूले को मैं मारूँ, तो इसे चोट लगेगी?"

"नहीं"

"और तुझे मारूँ तो?"

"हाँ, लगेगी!"

"इसलिए जहाँ-जहाँ असर हो वहाँ-वहाँ भगवान हैं। भगवान की उपस्थिति है इसीलिए सुख-दुःख, ठंडी-गर्मी, भूख-प्यास जैसी सभी असरों का अनुभव किया जा सकता है।"

"वाउ, सो इन्ट्रेस्टिंग!" इतने दिनों में पहली बार पार्थ को समाधान मिल रहा था। लेकिन अभी भी उसके प्रश्न जारी थे। "गुगल, यदि जीवमात्र में भगवान हैं, तो दादा जी कहाँ गए? मम्मी तो मुझसे कह रही थीं कि दादा जी भगवान के पास गए।"

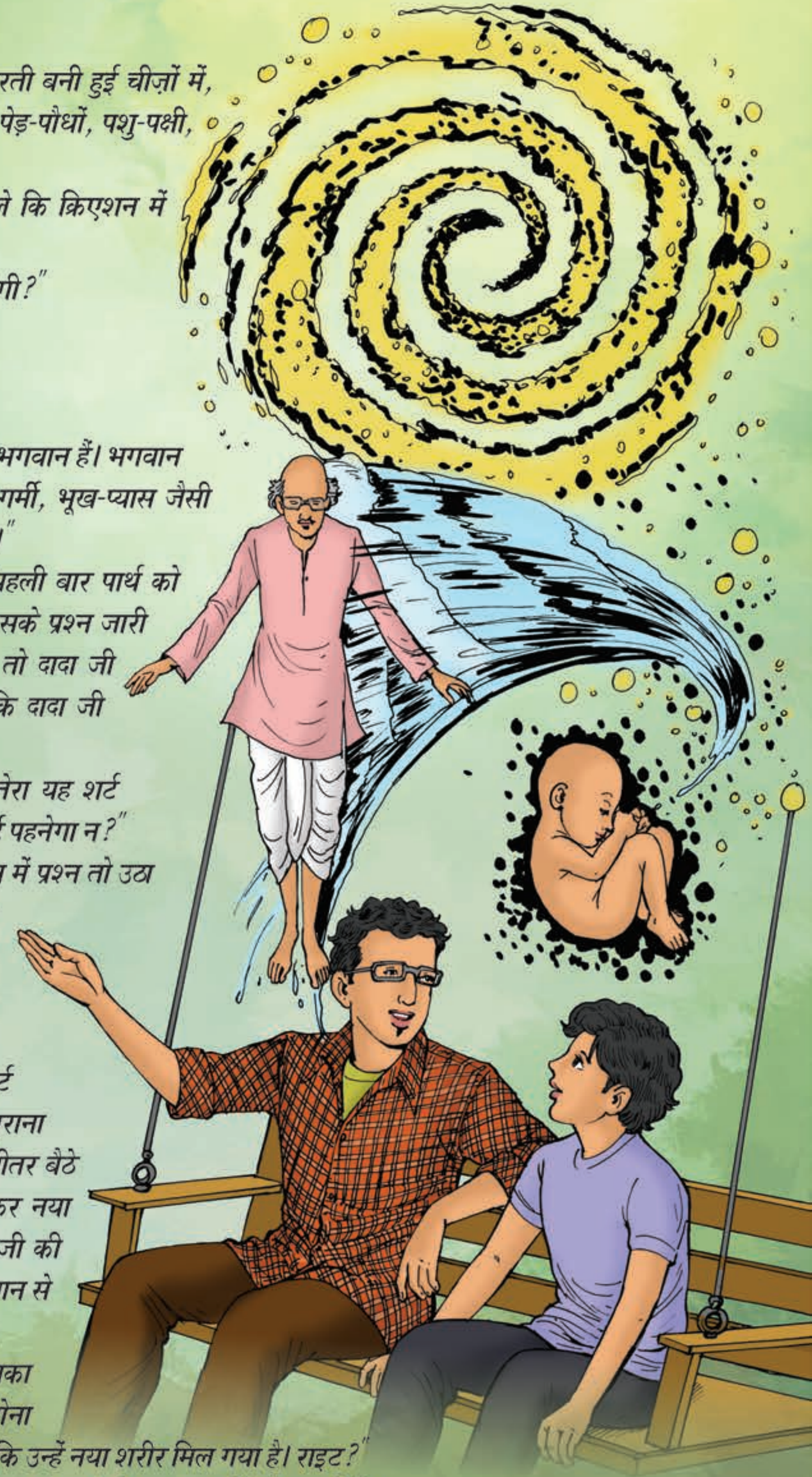

"पार्थ, तू मुझे एक बात बता, यदि तेरा यह शर्ट पुराना होकर फट जाए, तो तू दूसरा नया शर्ट पहनेगा न?"

"हाँ," पार्थ ने छोटा सा जवाब दिया। मन में प्रश्न तो उठा कि इस बात का दादा जी की बात से क्या लेना-देना होगा, लेकिन उसने धीरज रखा।

"हं... तो जिस तरह तेरा शर्ट पुराना हो जाए और फट जाए तो तू नया शर्ट पहनता है, उसी तरह, दादा जी का शरीर पुराना होकर, जर्जर हो गया था, इसलिए उनके भीतर बैठे हुए भगवान ने अपना पुराना शरीर छोड़कर नया शरीर धारण कर लिया है। जब तुझे दादा जी की याद आए, तब तू उनके भीतर बैठे हुए भगवान से प्रार्थना करना। करेगा न?"

"हाँ, श्योर!" पार्थ धीरे से बोला, "तो इसका मतलब, मुझे दादा जी के लिए दुःखी नहीं होना चाहिए। बल्कि मुझे तो ऐसा सोचना चाहिए कि उन्हें नया शरीर मिल गया है। राइट?"

"एब्सल्युटली राइट मिस्टर!" रोहित ने प्यार से पार्थ के गाल पर धीरे से थपकी दी।

पार्थ की आँखों में चमक आ गई। कई दिनों से बैचेन करनेवाले प्रश्नों का समाधान पाकर उसे एक अनोखे आनंद का अनुभव हुआ। वह रोहित भाई के गले लग गया, "थेन्क यू सो मच, गुगल!"

उस रात पार्थ फिर से दादा जी के रूम में गया। दादा जी की रॉकिंग चेयर पर बैठकर उसने एक छोटी सी प्रार्थना की, "हे दादा जी के भीतर बैठे हुए भगवान! आप जहाँ कहीं भी हों वहाँ खुश रहें।"

मीठी यादें

एक बार सभी बहनों ने मिलकर मठिये बनाए। सभी के कहने पर एक बहन नीरू माँ को मठिया चखाने गई। मठिया चखकर नीरू माँ बोले, "अच्छे हैं।" फिर तुरंत ही नीरू माँ ने उन बहन से पूछा, "तुम्हें अब कैसा लग रहा है? तुम्हारा दुःख कम हुआ?"

उस समय उन बहन को दुःख रहता था। उन्होंने नीरू माँ से अपने दुःख के बारे में बताया और कहा, "मुझे पता नहीं चलता कि इस दुःख से बाहर निकलने के लिए किस तरह स्टडी करूँ?"

नीरू माँ ने कहा, "तुम नेगेटिविटी से बाहर निकलो। सब से पहले तुम अपनी खुद की नेगेटिविटी से बाहर निकलो।"

नीरू माँ के शब्दों में इतनी ज्यादा ताकत थी कि उन बहन को ऐसे संयोग और निमित्त मिलने लगे कि वे धीरे-धीरे नेगेटिविटी से बाहर निकलने लगीं। इसकी वजह से उनका बहुत डेवेलपमेन्ट हुआ। नेगेटिविटी की वजह से उनकी जो शक्तियाँ क्षीण होती जा रही थीं वे खिलने लगीं और उनकी सूझ और कॉन्फिडेन्स लेवल भी बहुत बढ़ गया। पहले वह सिर्फ मशीनों के साथ ही काम कर सकती थी जबकि व्यक्तियों के साथ काम करने में उन्हें तकलीफ होती थी लेकिन धीरे-धीरे उनकी प्रकृति इतनी ज्यादा बदल गई कि वे हर किसी के साथ डीलिंग करने लगी और कैसी भी कठिन परिस्थिति में वह स्थिर रह पाने में समर्थ हो गई।

इस तरह नीरू माँ के शब्दों में इतना वचनबल था कि वह बहन नेगेटिविटी से बाहर निकल गई और बहुत अच्छी तरह दादा का काम करने लगी।

ज्ञानी को सभी का आरपार कैसे दिखता होगा कि वे एक्ज़ेक्ट कह सकते हैं कि प्रॉब्लेम कहाँ है। सचमुच, उनके प्रति अधीनता हमारा सभी तरह से कल्याण करके ही रहती है...

ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ

सुव्रत मुनि बहुत ही ध्यानी, ज्ञानी और तपस्वी थे। उनका एक महीने के उपवास के बाद पारणा था। इसलिए वे भिक्षा के लिए घूमते-घूमते चंपानगरी में पहुँच गए। वहाँ किसी मंगल कार्य में सिंहकेसरिया लड्डू की बात हो रही थी। उन्होंने मन में निर्णय किया कि, "आज भिक्षा में सिर्फ सिंहकेसरिया लड्डू ही लेने हैं।"

ऐसा विचार करते हुए वे एक श्रावक के घर आ पहुँचे और भिक्षा देने के लिए कहा। श्रावक ने तपस्वी मुनि का बहुत ही भाव से स्वागत किया। उन्होंने एक से ज्यादा व्यंजन मुनि को देने के लिए निकाले, लेकिन उसमें सिंहकेसरिया लड्डू नहीं था, इसलिए मुनि भिक्षा लिए बिना वापस लौट गए। श्रावक को लगा कि मुनि का कोई अभिग्रह होगा इसीलिए भिक्षा नहीं ली।

वहाँ से मुनि दूसरे श्रावक के यहाँ गए। वहाँ भी लड्डू नहीं मिला। ऐसा करते-करते शाम हो गई, लेकिन सिंहकेसरिया लड्डू कहीं भी नहीं मिला। इसलिए वे बहुत खिन्न और उदास हो गए। मुनि लड्डू लेने के लिए शाम के बाद भी भिक्षा के लिए घूमते रहे। सूर्य अस्त हो गया। वे एक श्रावक के घर के आँगन में जाकर खड़े हो गए और बोले, "सिंहकेसरिया"।

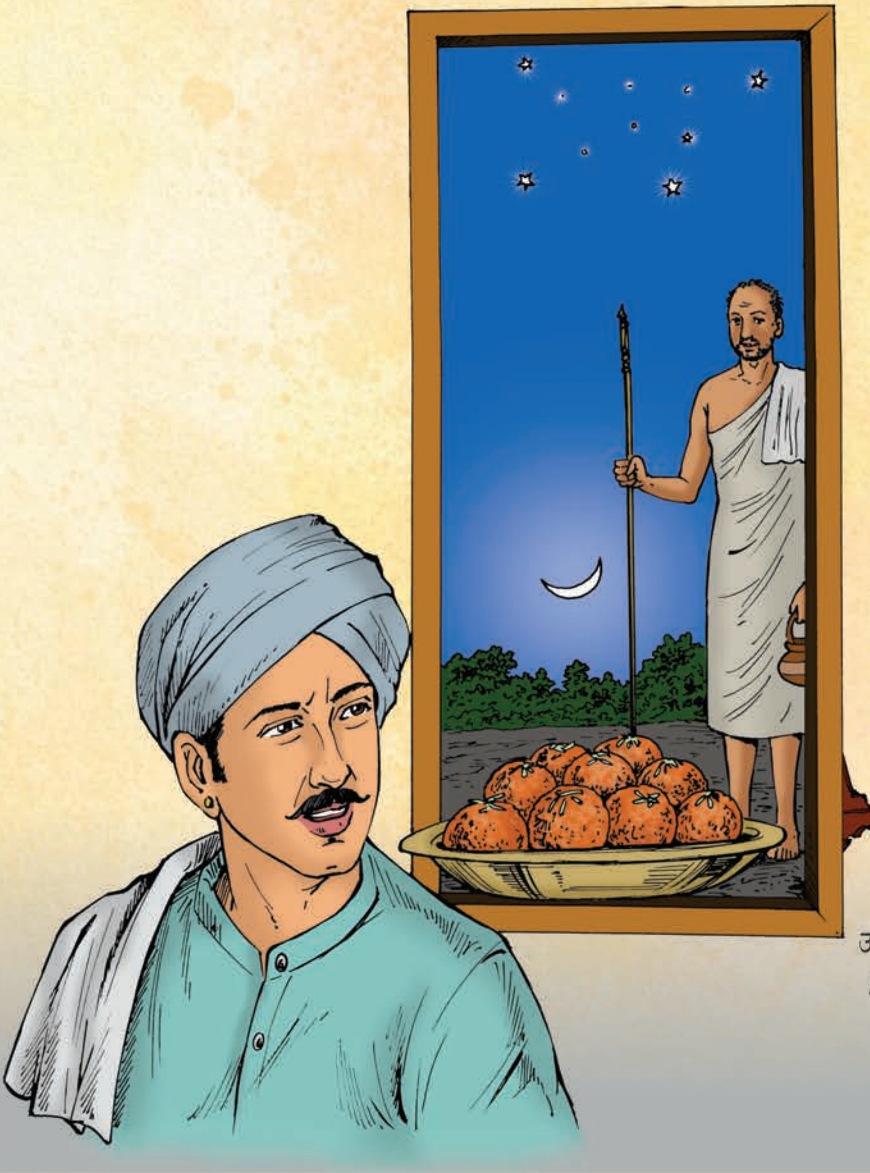

श्रावक सोचने लगे कि आँगन में सिंहकेसरिया कौन बोल रहा है? उसे विश्वास नहीं हुआ कि इतने तपस्वी साधु, धर्म लाभ के बदले सिंहकेसरिया क्यों बोल रहे हैं? श्रावक विवेकी और ज्ञानी थे। उन्होंने मशाल की रोशनी में ध्यान से देखा तो अरे! ये तो महान तपस्वी सुव्रत मुनि! ऐसे वैरागी, ज्ञानी रात के समय भिक्षा के लिए क्यों निकले होंगे? कहीं कुछ गलत हुआ है, वे समझ गए।

इस श्रावक को साधुओं के लिए बहुत ही आदर और भक्तिभाव था, इसलिए उन्होंने साधु का सम्मान बना रहे उस तरह साधु का स्वागत किया। वहोराने के लिए लाए गए व्यंजन में सिंहकेसरिया लड्डू भी था। मुनि ने तुरंत ही पात्र रख दिया। उनका चित्त शांत हो गया, लेकिन श्रावक की उलझन बढ़ गई। उन्हें लगा कि, "मुनि इन लड्डुओं के लालच में रात्रि भोजन करेंगे तो उनका महाव्रत टूट जाएगा। मैं क्या करूँ कि मुनिराज महादोष से बच जाएँ?"

जब मुनि जा रहे थे तभी उनके मन में विचार आया और उन्होंने विनयपूर्वक कहा, "हे तपस्वी, आज मुझे चौविहार(सूर्यास्त से पहले भोजन) करना है तो उसका समय हो गया है या नहीं? उसे बताने की कृपा कीजिए।" तपस्वी मुनि ने समय देखने के लिए आकाश की ओर देखा तो दिल में धक्का लगा। "अरे! रात हो गई है और मैं श्रावक के घर भिक्षा के लिए आया हूँ! ओहो! मुझ से यह क्या हो गया? लड्डू के लोभ और लालच में मैं अपनी मर्यादा भूल गया?"

"हे तपस्वी, आज मुझे चौविहार(सूर्यास्त से पहले भोजन) करना है तो उसका समय हो गया है या नहीं? उसे बताने की कृपा कीजिए। "

मुनि ने स्वस्थता से श्रावक से कहा, "तुम सचमुच ही विनयी हो कि तुमने श्रावक का कर्तव्य समझकर मुझ से भिक्षा वहोराने और पच्चखान (या प्रत्याख्यान-किसी भी चीज़ को न खाने की प्रतिज्ञा) का समय पूछकर मुझे खाने के लालच से बचा लिया, और मुझे मेरे मार्ग से विचलित होने से बचा लिया। मैं तुम्हें वंदन करता हूँ।" और मुनि तुरंत ही वहाँ से अपने आत्मकल्याण के रास्ते चले गए।

बोध :-

1. हमें अपने घर के आँगन में आए हुए साधु-भगवंत का आदर करना चाहिए।

2. श्रावक मुनि से नीचे पद पर थे फिर भी विनय से मुनि की भूल बताई और उन्हें उनके मार्ग से गिरने से बचा लिया।

3. मुनि भी कैसे कि उनसे नीचे पद पर श्रावक थे फिर भी उन्हें वंदन किया और अपनी भूल स्वीकार करके वापस लौट गए।

इसलिए बच्चों, हमसे जीवन में यदि कोई भूल हो जाए तो सही बात का स्वीकार करके तुरंत ही पलट जाना चाहिए (मुनि की तरह)। और बड़ों की और छोटे-बड़े भाई-बहन की बात सुननी चाहिए तो हम भी जीवन में उल्टे रास्ते जाने से बच जाएँगे।

और किसी भी चीज़ के लालच में नहीं आना चाहिए, नहीं तो हम अपने तय किए हुए ध्येय तक पहुँच ही नहीं पाएँगे।

दादानगर में मनाए गए "अक्रमे विक्रम" की झलक

शोभायात्रा

समोवसरण में प्राणी, देवी-देवता और साधु-साध्वी जी

कषायों का स्वरूप

नीरू माँ ने अविरत लिखी वाणी...

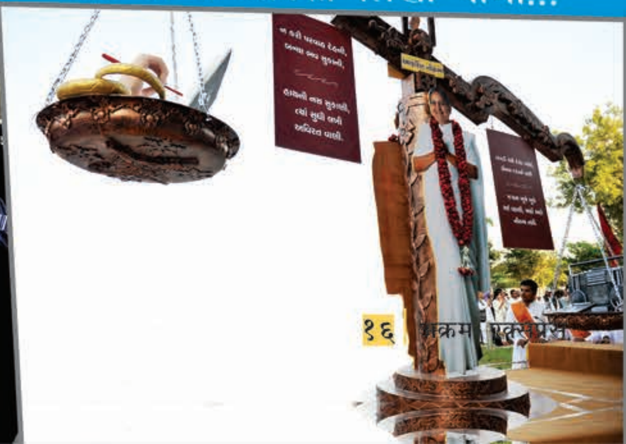

कल्चरल प्रोग्राम

वेलकम ऑफ पूज्य श्री

सरस्वती देवी वंदना

नारद मुनि और सरस्वती देवी का वार्तालाप

नमो नमामि तीर्थंकरम् - देवी-देवताओं का सुंदर नृत्य

मामा की पोल का सुंदर दृश्य

आप्तवाणी विमोचन नृत्य

आप्तवाणी-14 का विमोचन का दृश्य

Akram Express

February 2016
Year : 3, Issue : 11
Conti. Issue No.: 35

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

और अंत में...

टीचर : अगर तू मुझे यह बता सके कि भगवान कहाँ हैं, तो मैं तुझे **100** *रुपए ईनाम दूँगी।*

बच्चा हँसता है और जवाब देता है कि - टीचर, मैं आपको करोड़ों रुपए दूँगा, अगर आप मुझे यह बता दें कि भगवान कहाँ पर नहीं हैं।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** *हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा.* **AGIA4313#** *और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद* **##** *हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा.* **AGIA4313##** *अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।*

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** *करें।*

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, *२. पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।*

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published